❶ ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आओ यज्ञ करें
3 मई
अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा घोषित

यज्ञ के शोध-विज्ञान-इतिहास एवं लाभ और विधि जानने के लिए
9868-47-47-47
मिस्ड कॉल करें
SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

वर्ष 48, अंक 27 — एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 अप्रैल, 2025 से रविवार 4 मई, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 — सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 — पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये — दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पहलगाम में आतंकियों द्वारा धर्म पूछकर 28 लोगों की नृशंस हत्या

आतंकी और आतंक के पोषक पाकिस्तान की कायरता पर आर्य समाज का जन्तर-मन्तर पर महारोष प्रदर्शन

आतंक के विरुद्ध सरकार के प्रत्येक कठोर कदम के साथ है, आर्य समाज

आर्यसमाज ने विभिन्न स्थानों पर विरोध प्रदर्शन के साथ दी श्रद्धांजलि

22 अप्रैल 2025 को कश्मीर के पहलगाम में धर्मांध आतंकियों द्वारा 28 लोगों की नृशंस हत्याओं को लेकर संपूर्ण भारत में अत्यंत रोष व्याप्त है। उस दिन से लगातार देश के कोने-कोने में मृतकों के प्रति श्रद्धांजलि, परिजनों के प्रति शोक संवेदना और उन क्रूर हत्यारे आतंकवादियों के प्रति कठोर कार्रवाई की मांग जगह-जगह की जा रही है। इसके लिए गांव-गांव, शहर-शहर, गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले में बड़ी संख्या में रोष प्रदर्शन किये जा रहे हैं। और क्यों ना किए जाएं रोष प्रदर्शन? इस अमानवीय हरकत के लिए उन दरिंदों ने न केवल अपने परिजनों के साथ घूमने गए सरल, सहज लोगों को धोखे से मौत के घाट उतारा, अपितु उनका धर्म जानकर और हिंदू धर्म की पहचान करके उन निरपराध लोगों के ऊपर बड़ी बेरहमी से गोलियां बरसाई। इस जघन्य अपराध के लिए अपराधियों की निंदा और भर्त्सना से काम नहीं चलेगा, इसके लिए तो उन कायर, मानवता के दुश्मन आतंकियों और उनके सरपरस्त देश पाकिस्तान को भी दण्डित करने की मांग भारतीय निरन्तर कर रहे हैं।

रोष प्रदर्शन के इस क्रम में आर्य समाज द्वारा 27 अप्रैल 2025 को लगभग

- शेष पृष्ठ 5-6 पर

ओ३म्
अंतरराष्ट्रीय यज्ञ दिवस
आइए, लाखों परिवारों के साथ एक समय पर यज्ञ करें
शनिवार 3 मई, 2025 | प्रातः 9:00 बजे
अपने यज्ञ की फोटो और वीडियो फेसबुक और ट्विटर पर #घरघरयज्ञ के हैशटैग के साथ शेयर करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 4 मई, 2025 सायं : 3:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अत्यावश्यक अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 4 मई, 2025** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **सायं 3:00 बजे** से आयोजित की गई है। सभी माननीय सम्मानित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्य महानुभावों को बैठक का ऐजेण्डा पत्रक व्हाट्सएप्प, टेलीग्राम एवं साधारण डाक से विधिवत् भेज दिया गया है। अत: सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

निवेदक :- धर्मपाल आर्य (प्रधान) — विनय आर्य (महामन्त्री)

देववाणी-संस्कृत

मरणशील मनुष्यों का अमरदेव ही स्तुत्य

वेद-स्वाध्याय

तमध्वरेष्वीळते देवं मर्ता अमर्त्यम्। यजिष्ठं मानुषे जने।।

-ऋ० 5।14।2

ऋषिः- आत्रेयः सुतम्भरः।। देवता-अग्निः।। छन्दः-विराड्गायत्री।।

शब्दार्थ - **अध्वरेषु** = सब यज्ञों में **मर्त्ताः** = हम मरणशील मनुष्य **तं अमर्त्यं देवम्** = उस अमर-कभी न मरनेवाले-देव की ही **ईळते** = पूजा करते हैं जो देव **मानुषे जने** = प्रत्येक मनुष्य के अन्दर **यजिष्ठम्** = यजनीय है।

विनय - नाना प्रकार के यज्ञों में जो हम विविध कर्म करते हैं, असल में हम उन सब कर्मों द्वारा उस अमरदेव का ही पूजन करते हैं। हम मरणशील मनुष्यों को अमरदेव के ही यजन करने की आवश्यकता है। प्रत्येक यज्ञ-कर्म प्रयोजन यही है कि हम उस द्वारा मृत्यु से पार हो जाएँ-अमर हो जाएँ। यज्ञ मर्त्य को अमर बनाने के लिए ही है, पर हम यज्ञों द्वारा जिस अमरदेव की पूजा करते हैं, वह अमरदेव है कहाँ? सुनो, वह अमरदेव प्रत्येक मानुष जन में है, प्रत्येक मनुष्य में 'यजिष्ठ' होकर विद्यमान है। हमें प्रत्येक मानुष में उसका यजन करना चाहिए, इसीलिए कहा जाता है कि यज्ञ सब मनुष्यों के हित के लिए होता है। यज्ञ का स्वरूप परोपकार है-एक-एक मनुष्य का हितसाधन है। मनुष्यों की सेवा करना ही यज्ञ करना है। जितना हम मनुष्यों की सेवा करते हैं-मनुष्यों की पीड़ाओं और दुःखों को दूर करने के लिए निःस्वार्थभाव से यत्न करते हैं-उतना ही हमारे ये कार्य यज्ञ होते हैं। अग्निहोत्र द्वारा किये जानेवाले पुराने ऋतु-यागादि भी आधिदैविक-देवों की अनुकूलता प्राप्त करके मनुष्य-जनता के हित के प्रयोजन से ही किये जाते थे, पर इतने से भी यज्ञ का तात्पर्य पूरा नहीं होता। मनुष्यों की जिस किसी प्रकार की सेवा करने से यज्ञ नहीं हो जाता। हमें तो प्रत्येक मनुष्य में उस अमरदेव का ही यजन करना है। जिस सेवा से मनुष्य के अमरदेव की सेवा नहीं होती, वह सेवा-सेवा नहीं है; वह सेवा-यज्ञ नहीं है। भोगविलास की सामग्री जुटाने से बेशक मनुष्यों की तृप्ति होती दीखती है, परन्तु यह मनुष्यों की सच्ची सेवा नहीं है। ऐसा 'परोपकार' यज्ञ नहीं, अयज्ञ है। इसी प्रकार भूखों को इस प्रकार अन्न देना, रोगियों को इस प्रकार औषध देना भी जो उनकी सच्ची उन्नति में-उन्हें अमर बनाने में-बाधक होवे, यह भी यज्ञ नहीं है, अर्थात् जनता की भौतिक उन्नति साधना तभी तक यज्ञ है जब यह भौतिक उन्नति उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही हो। आध्यात्मिक उन्नति करना ही-दूसरे शब्दों में-मर्त्य से अमर बनना है। आओ, हम मर्त्य अमरदेव की पूजा करें, मनुष्य ऐसी सेवा करने में अपने को खो देवें जो सेवा उनके अमर बनने में सहायक हो।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पहलगाम आतंकी हमला: भारत का बदला कैसे होगा पूरा?

22 अप्रैल को पहलगाम के पास बैसरन घाटी के मनोरम मैदान में सैलानियों और हनीमून मनाने गए जोड़ों की भीड़ पर मजहबी आतंकवादियों ने हमला कर पूरे देश को हिलाकर रख दिया। हमले के बाद सरकार ने पाकिस्तान के खिलाफ कुछ कठोर कदम उठाने की घोषणा की। इसके बाद टीवी न्यूज़ चैनलों पर कुछ अतार्किक विशेषज्ञ युद्ध की मांग करने लगे तो विशेषज्ञ बिना सिर-पैर की अपनी टिप्पणी और सलाह देने लगे।

घटना के बाद सरकार ने बिना देरी किए जवाब देने के कई कदमों की घोषणा की, जिनमें सिंधु जल संधि को स्थगित करने से लेकर सभी पाकिस्तानी सैन्य सलाहकारों को अवांछित व्यक्ति घोषित करना तक शामिल था। इन सभी कदमों ने न केवल हालात की गंभीरता को रेखांकित किया बल्कि भावी कार्रवाई के संकेत भी दे दिए। रक्षा मंत्री और प्रधानमंत्री, दोनों ने राष्ट्र के आक्रोश को स्वर देते हुए कड़े बयान दिए और न केवल हमला करने वालों को सजा देने बल्कि इसके पीछे छिपे साजिशकर्ताओं को निशाना बनाने के भी संकल्प व्यक्त किए।

पहलगाम में हुए हमले को अगर गंभीरता से देखें तो हमला भारतीय पर्यटकों पर नहीं, घाटी में घूमने गए हिंदुओं पर हुआ है! इसमें कश्मीरी कितने शामिल हैं, यह बाद की बात है क्योंकि इस मामले को धर्म की विवेचना पर देखने के बजाय अभी एक राष्ट्र के लिहाज से देखना उचित होगा। कारण, धारा 370 हटने के बाद कश्मीर में कई हमले पर्यटकों पर हुए, किंतु पहली बार जिस तरीके से आम कश्मीरी आतंक और पाकिस्तान को लेकर सड़कों पर उतरा, वह एक देखने लायक बात है।

पहली बार श्रीनगर के लाल चौक पर आम कश्मीरी मुसलमान तिरंगा हाथ में लेकर पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाता दिखा, यह भी पाकिस्तान के लिए शुभ नहीं है। इस कारण कश्मीर घाटी में पाकिस्तान के भावनात्मक प्रभाव को पूरी तरह समाप्त कर देने का यह आदर्श मौका है। आम कश्मीरी इस आतंकी घटना और इसके पीछे मौजूद पाकिस्तानी एजेंडे के पूरी तरह खिलाफ है। इससे उसकी साख पर, उसकी अर्थव्यवस्था पर, उसके स्वाभिमान पर गहरी चोट पहुंची है। लेकिन, बाकी देश में अभी कुछ-कुछ वैसा ही होता दिख रहा है, जैसा पाकिस्तान चाहता होगा कि भारत में हो!

यह उचित समय नहीं है कि अभी कश्मीर हमले को भारतीय मुस्लिम समाज से जोड़कर इसे कोई रंग दिया जाए, बल्कि इसे पाकिस्तान और इस्लाम से जोड़ा जाए तो काफी हद तक संदेश दिया जाएगा कि गड़बड़ मजहबी साहित्य और पाकिस्तान के अंदर है। दूसरा, एक बार फिर से देश के लोगों ने संयम से काम लिया क्योंकि पाकिस्तान की फौज और आईएसआई चाहती थी कि धर्म पूछकर हत्या करने के बाद भारत के हिंदू अपने यहां के अल्पसंख्यकों से बदला लेने पर उतर आएंगे। जिससे भारत में गृहयुद्ध छिड़ जाएगा। यानी जिस तरह पाकिस्तान के अंदर बलूचिस्तान और खैबर पख्तून में पाकिस्तानी सेना उलझी खड़ी है, वहां गृहयुद्ध छिड़ा है, ऐसे ही गृहयुद्ध में भारत भी उलझ जाए। दूसरे स्तर पर यह भारत को सामरिक, सैन्य, राजनीतिक और मनोबल की दृष्टि से कमजोर और दिशाहीन करेगा। तीसरा पहलू सबसे महत्वपूर्ण है: भारत का बहुसंख्यक हिंदू समुदाय जब गुस्से तथा हताशा में अपने अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ खड़ा हो जाएगा, तब पाकिस्तान के आर्मी चीफ का हालिया बयान दो कौम वाला सिद्धांत सही साबित हो जाएगा।

फ़िलहाल पाकिस्तान अंदरूनी तौर पर घिरा है। वहां की आर्मी के खिलाफ इमरान खान की पार्टी के लोग तो मुखर हैं ही, साथ ही बलूच लिबरेशन फ़ोर्स और

पहलगाम में हुए हमले को अगर गंभीरता से देखें तो हमला भारतीय पर्यटकों पर नहीं, घाटी में घूमने गए हिंदुओं पर हुआ है! इसमें कश्मीरी कितने शामिल हैं, यह बाद की बात है क्योंकि इस मामले को धर्म की विवेचना पर देखने के बजाय अभी एक राष्ट्र के लिहाज से देखना उचित होगा। कारण, धारा 370 हटने के बाद कश्मीर में कई हमले पर्यटकों पर हुए, किंतु पहली बार जिस तरीके से आम कश्मीरी आतंक और पाकिस्तान को लेकर सड़कों पर उतरा, वह एक देखने लायक बात है।

पहली बार श्रीनगर के लाल चौक पर आम कश्मीरी मुसलमान तिरंगा हाथ में लेकर पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाता दिखा, यह भी पाकिस्तान के लिए शुभ नहीं है। इस कारण कश्मीर घाटी में पाकिस्तान के भावनात्मक प्रभाव को पूरी तरह समाप्त कर देने का यह आदर्श मौका है। आम कश्मीरी इस आतंकी घटना और इसके पीछे मौजूद पाकिस्तानी एजेंडे के पूरी तरह खिलाफ है। इससे उसकी साख पर, उसकी अर्थव्यवस्था पर, उसके स्वाभिमान पर गहरी चोट पहुंची है। लेकिन, बाकी देश में अभी कुछ-कुछ वैसा ही होता दिख रहा है, जैसा पाकिस्तान चाहता होगा कि भारत में हो!

तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान गुट भी सरदर्द किए हुए हैं। यहाँ तक कि अफगानिस्तान वाले तालिबान से भी पाकिस्तान के संबंध इतने खराब हैं कि पाकिस्तान वहां अपनी एयर फ़ोर्स से अफगान लोगों को मार रहा है। चारों तरफ से घिरे पाकिस्तान की स्थिति इस बात से समझी जा सकती है कि पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष जनरल आसिम मुनीर ने विदेश में रह रहे पाकिस्तानियों के बीच 16 अप्रैल को जो भाषण दिया, उसे ध्यान से सुनिए। अपने ही घर में उनकी साख जिस तरह गिर रही है और वे जिस तरह कुरान के हवाले देकर आक्रामक भाषण दे रहे हैं, उस पर अगर आप ध्यान देंगे, तब आप समझ जाएंगे कि दर्द कहां से उठ रहा है।

यह दर्द पाकिस्तान की वैचारिक बुनियाद, दो कौम वाले सिद्धांत की विफलता से उपजता है, जिसे 1971 में ध्वस्त कर दिया गया था। उस सिद्धांत को फिर से चुनौती पाकिस्तान के पश्चिमी सूबों में स्थानीय अल्पसंख्यकों की ओर से मिल रही है। वे सब मुसलमान ही हैं, लेकिन उनमें से कई इससे बाहर आना चाहते हैं और इसके लिए मरने-मारने तक को तैयार हैं।

यही कारण रहा है मदरसों में इस्लामिक सोच पैदा कर भाड़े के प्रत्यक्ष और परोक्ष तत्वों का इस्तेमाल करके भारत में हिंदुओं को निशाना बनाना ही आइएसआइ की चाल रही है। वे चाहते हैं कि भारत में अपने ही अल्पसंख्यकों के खिलाफ गुस्सा पैदा हो और उन्हें निशाना बनाया जाए। इसकी भनक भी पाकिस्तानी फौज की लोकप्रियता

- शेष पृष्ठ 7 पर

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर विशेष

आर्य समाज के स्थापना की पृष्ठभूमि

गतांक से आगे –

पहिले के बनाये गये नियम उप नियमों को पुन: देख भालकर व्यवस्थित कर लिया गया और महर्षि के समक्ष प्रस्तुत किया गया। साधारण संशोधन कर के महर्षि ने भी स्वीकार कर लिया।

"यहां बीच में एक और महत्व का तथा मनोरंजक प्रसंग उपस्थित हुआ। (श्री देवेन्द्रनाथ लिखित श्री महर्षि के जीवन चरित अष्टम परिच्छेद पू. 244-45 के अनुसार) वल्लभ संप्रदाय के श्री. पं. गट्टूलाल जी का महर्षि के साथ शास्त्रार्थ करने की सूचना जाहिर हुई किन्तु सूचना के अतिरिक्त और कुछ नहीं हुआ। श्री पं. गट्टूलाल विचार सभा में नहीं आये। तब श्री महर्षि ने पुष्टि मार्ग की तीव्र आलोचना की। पुष्टि मार्ग के अनुयाइयों में से हटकर जो लोग जिज्ञासुभाव से महर्षि के पास आते जाते थे उनमें दो पक्ष हो गया। एक पक्ष ने महर्षि दयानन्द के प्रतिपादित धर्म को प्राकृत आर्यधर्म कहकर विश्वास कर लिया और दूसरा पक्ष उस को आर्य धर्म न कहकर विश्वास करने लगा । प्रथम पक्ष में श्री सेवक लाल कृष्णदास, श्री. शेठ मथुरादास लवजी, श्री शेठ छबीलदास लल्लुभाई और श्री गिरधरलाल दयालदास कोठारी आदि छ: व्यक्ति प्रमुख थे। अस्तु, "वेद में मूर्ति पूजा की व्यवस्था है कि नहीं," इसी विषय को लेकर दोनों पक्ष में एक वितर्क उपस्थित हुआ। उपस्थित विषय में जितनी बार भी स्वामीजी से जिज्ञासा की गई उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि व्यवस्था की कथा दूर रही, वेद में मूर्ति पूजा का उल्लेख मात्र भी नहीं है। इस से और भी कौतूहल बढ़ा और यहां तक कि वेद से मूर्तिपूजा सिद्ध करने के लिये 5 हजार और 10 हजार रुपये तक का पारितोषिक देने के लिये लोग तैयार हो गये। मूर्त्ति पूजा वेदों से सिद्ध करने पर इतनी बड़ी धन राशिका मिलना कोई साधारण बात नहीं थी, किन्तु वेद के किस स्थल और किस मंत्र में मूर्त्ति पूजा की कथा है, यह कोई नहीं सिद्ध कर सका। इससे श्री स्वामीजी के पक्ष वालों का उत्साह बढ़ा और दिन प्रतिदिन नये नये लोग आकर उनके पक्ष में सम्मिलित होने लगे। पीछे उन्हीं दलबद्ध लोगों को लेकर महर्षि ने भारत भूमि में आर्य समाज का पुण्य बीज बोया।"

इस प्रकार सब आवश्यक प्राथमिक तैयारी कर लेने के बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बुधवार संवत् 1931 तारीख 7 अप्रैल सन् 1875 को मध्यान्होत्तर 4 बजे प्रार्थना समाज के पास श्री माणेक जी की बाड़ी में आर्य समाज की स्थापना के लिये सभा हुई। उक्त सभा के अध्यक्ष श्री गिरधरलाल दयालदास कोठारी थे। सभा में आर्य समाज की स्थापना की घोषणा की गई। इस प्रकार चैत्र सुदी प्रतिपदा सं. 1931 को बम्बई नगर में आर्य समाज ने जन्म ग्रहण किया।

उसी दिन उसी स्थान पर आर्य समाज के अधिकारियों का भी चुनाव हुआ। श्री गिरधरलाल दयालदास कोठारी समाज के प्रधान और श्री पानाचंद आनन्दजी पारेख मंत्री चुने गये। उक्त दोनों महानुभावों को इस नवजात आर्य समाज के सर्व प्रथम प्रधान और मंत्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

समाज का प्रथम साप्ताहिक अधिवेशन उसी स्थान पर चैत्र शु. 5 शनिवार सं. 1931 तदनुसार ता. 10 अप्रैल सन् 1875 को सायंकाल को "आर्य समाज की आवश्यकता" पर महर्षि दयानन्दजी महाराज का प्रथम भाषण हुआ ।

इस प्रकार बम्बई नगर में आर्य समाज का उद्भव हुआ। आज उसकी जन्म शताब्दी के शुभअवसर पर हम उन सभी महानुभावों का श्रद्धापूर्वक बन्दन करते हैं कि जिन्होंने अनेक प्रकार के मानापमान को धैर्यपूर्वक सहन करके इस पुनीत कार्य में योग देकर महर्षि के करकमलों द्वारा प्रारंभकी गई इस ज्ञान यज्ञ की पवित्र बेदीको प्रतिष्ठित किया ।

आर्य समाज की स्थापना तिथि

आर्य समाज की स्थापना सं. 1931 के चैत्र शुक्ल पक्ष 1 (प्रतिपदा) बार बुध तदनुसार ता. 7 अप्रैल सन् 1875 के दिन हुई। किन्तु श्री स्वामी दयानन्दजी महाराज के जीवन चरित लिखने वाले महानुभावों ने समाज की स्थापना तिथि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के बदले चैत्र शुक्ल पंचमी लिख दिया। यद्यपि श्री स्वामीजी महाराज के प्रथम जीवन चरित लेखक श्री बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने बंगाली भाषा में जो प्रथम ग्रंथ लिखकर प्रकाशित किया और मेरठ निवासी श्रीयुत् बाबू घासीराम जी एम.ए.एल्.एल्.बी. ने आर्य भाषा में अनूदित किया है उस में आर्य समाज की स्थापना तिथि चैत्र शुक्ल पक्ष 1 प्रतिपदा ही लिखी है। किन्तु दूसरा बड़ा संस्करण उन्ही महाशय श्री देवेन्द्र बाबू की संकलित सामग्री से श्रीयुत् बाबू घासीराम जी ने आर्य भाषा में और दो भाग में लिखकर प्रकाशित किया है उसमें चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी शनिवार तथा ता. 10 अप्रैल सन् 1875 लिखा है और उनके बाद के सभी लेखक महानुभाव वही पंचमी तिथि लिखते गये, जो एक भूल है। वास्तव में चैत्र शुक्ल पंचमी, आर्य समाज की स्थापना हो जाने के बाद सर्व प्रथम साप्ताहिक सत्संग की तिथि – है उसी को लोगो ने समाज की स्थापना तिथि मान ली।

इस के संबंध में आर्य समाज बम्बई के पुराने प्रारंभिक रजिस्टर जिस में प्रत्येक साप्ताहिक सत्संग के विवरण विस्तार पूर्वक लिखे जाया करते थे उसको देखने से स्पष्ट विदित होता है कि आर्यसमाज की स्थापना चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को हुई क्योंकि प्रति वर्ष के चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को समाज का स्थापना महोत्सव विशेष समारोह से मनाया जाता था और वह परंपरा आज तक चली जा रही है। इस विषय में सब से बड़ी विशेषता तथा महत्व पूर्ण बात यह है कि आर्य समाज मंदिर वनवाने के लिये जो भूमि खरीदी गई उसी स्थान पर समाज का स्थापना महोत्सव मनाया गया और दैव योग से श्री स्वामीजी महाराज उस अवसर पर बम्बई में ही थे। उन महात्मा की उपस्थिति में और उनकी आज्ञानुसार प्रात:काल 8 बजे से 11 बजे तक यज्ञ हुआ जिसमें श्री स्वामीजी महाराज के शिष्य ब्रह्मचारी गिरानन्द के अतिरिक्त नगर के अन्य दक्षिणी और गुजराती वेदपाठी विद्वानों को आमंत्रित किया गया था और सब ने मिलकर इस मांगलिक यज्ञ को विधिपूर्वक सम्पन्न किया और सायंकाल उसी दिन उसी स्थान पर 5 से 8 बजे तक श्री स्वामीजी महाराज का वेद विषयपर भाषण हुआ यह अवसर सं 1938 ता. 20 मार्च सन् 1882 का है। प्रात: काल यज्ञ की समाप्ति पर सब आमंत्रित विद्वानो को यथाशक्ति दक्षिणा देकर सम्मानित किया गया।

दूसरी सभा उसी स्थान पर चैत्र शुक्ल पक्ष 3 बुधवार सं. 1938 ता. 22 मार्च सन् 1882 को 5 वजे सायंकाल को हुई और उसमें भी श्री स्वामीजी महाराज का वेद विषयपर भाषण हुआ। रजिस्टर में गुजराती लिपी और गुजराती भाषा में निम्न प्रकार उल्लेख है। "ते पछी बीजे दिवसे अॅटले चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा ने वार सोम संवत् 1938 ता. 20 मार्च ने सन् 1882 ने रोजे आर्य नो जन्म दिवस होवाथी महोत्सव करवामां आव्यो हतो।"

उपर्युक्त विवरण पर विचारणीय यह है कि यदि समाज का स्थापना दिन पंचमी हो तो प्रतिपदा के दिन स्थापना महोत्सव पर श्री स्वामी जी महाराज की उपस्थिति और दो दिन तका उनका व्याख्यान होना कैसे संभव हो सकता है?

यहां एक प्रश्न यह भी उठता है कि सृष्टि संवत् और विक्रमीय संवत् इसी चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से बदलते है और यही प्रतिपदा तिथि को वर्ष के प्रथम दिन माना गया है, अत: समाज की स्थापना के संबंध में महर्षि दयानन्द जैसे प्राचीन परंपरा वादी ऋषि के ध्यान से इस तिथि का महत्व बाहर कैसे रह सकता है?

आर्य समाज मंदिर पर लगा शिलालेख–

"संवत् 1931 स्थापित हुआ स. 1875 चैत्र शुक्ल 1 ता. 7 अप्रैल बुधवार"

आर्य समाज के स्व स्थान (मन्दिर) के लिये जो जमीन खरीदी गई और उसका जो सर्व प्रथम ट्रस्ट डीड निम्न लिखित ट्रस्टी महाशयों के नाम पर बना उस ट्रस्ट डीड के दस्तावेज पर भी समाज की स्थापना तारीख वही 7 अप्रैल 1875 लिखी है–

समाज के प्रथम ट्रस्टी

1. रा. व. गोपालराव हरी देशमुख
2. श्री सेवकलाल करशनदास
3. श्री शेठ सुन्दरदास धर्मसी
4. श्री शेठ जीवनदास मूलजी
5. श्री प्राणजीवनदास कहानदास मास्टर

आर्य समाज के संस्थापकों में एक अग्रगण्य व्यक्ति श्रीमान् सेवकलाल करशनदासजी ने ता. 17 फरवरी 1889 की समाज की वार्षिक साधारण सभा में स्वीकृति के लिये समाज का 13 वर्षों का हिसाब रखा था उसपर उक्त महाशय श्री सेवकलाल करशनदास के निम्नलिखित शब्द भी देखने योग्य हैं।

भाषा और लिपि दोनों गुजराती में– "मुम्बई आर्य समाज संवत् 1931 ना चैत्र शुद 1 ने दिने स्थापन थयो ते दिवसथी संवत् 1944 फागण बद०) लगीनु सरवाया पत्रक देशी रीते।"

इन उपर्युक्त उद्धरणों से पूर्ण रूप से निश्चय हो गया कि आर्य समाज की स्थापना संवत् 1931 के चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को हई पंचमी को नहीं।

इस विषय को आज से एकाध वर्ष पूर्व आचार्य श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री बम्बई आर्य समाज के प्रारंभिक विवरणों रजिस्टरों आदिका निरीक्षण अध्ययन करके तथा बम्बई के तत्कालीन दैनिक वर्तमान पत्रों की फाइलों को देखकर इसी निर्णयपर

– शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

28 अप्रैल, 2025
से
04 मई, 2025

200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें स्थापना वर्ष पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

रायपुर में धर्मरक्षा महायज्ञ एवं सनातन वैदिक धर्म संस्कृति महासम्मेलन सम्पन्न

देश, धर्म, संस्कृति रक्षा और जन जागरण में आर्य समाज की भूमिका अनुकरणीय - विष्णुदेव साय, मुख्यमंत्री

स्वदेशी, स्वराज और स्वाभिमान के पुरोधा थे, महर्षि दयानंद सरस्वती - डॉ. रमन सिंह, विधान सभा अध्यक्ष

संसार का उपकार है आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य - आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात

भवन नहीं, भावनापूर्ण आन्दोलनकारी संगठन है आर्यसमाज की असली पहचान - विनय आर्य

वर्तमान में गतिशील आयोजनों की शृंखला में छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 19, 20 अप्रैल 2025 की तिथियों में दो दिवसीय धर्मरक्षा महायज्ञ एवं सनातन संस्कृति महासम्मेलन का आयोजन अत्यंत उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह जी, मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी, गुजरात के माननीय राज्यपाल, आचार्य देवव्रत जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, गुजरात सभा के महामंत्री श्री दीपक भाई ठक्कर जी, श्री रूपनारायण सिंह जी, संयोजक, श्री संपत अग्रवाल जी, विधायक, श्री विश्रा राम जी यादव, अध्यक्ष, श्री रामकुमार पटेल जी, प्रधान छत्तीसगढ़ सभा, श्री किशन गहलोत जी, प्रधान, राजस्थान सभा, स्वामी धर्मानन्द जी, प्रधान उत्कल सभा, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी, हरियाणा सभा, श्री पार्थ रावल जी, श्री गौतम खट्टर जी, श्री प्रबल प्रताप जी, स्वामी शांतानंद जी, दर्शन योग महाविद्यालय एवं अनेक अन्य महानुभावों ने इस अवसर पर उपस्थित आर्यजनों के समूह को संबोधित किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ 200 कुंडीय यज्ञ से हुआ, जिसके ब्रह्मा आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी रहे, दोनों दिन हजारों यजमानों ने प्रातः काल धर्मरक्षा महायज्ञ में आहुति देकर अपने जीवन को गौरवान्वित किया और विश्व मंगल की कामना की। वैदिक सनातन संस्कृति महासम्मेलन का उद्घाटन दीप प्रज्वलन से हुआ, जिसमें डॉ रमन सिंह जी के साथ में उपस्थित महानुभाव सहभागी रहे। सर्वप्रथम सभा की ओर से सभी महानुभावों का पीत वस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर के सम्मान किया गया। इसके उपरांत स्वामी शांतानंद जी ने

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज सुन्दर विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सड़कों और उद्यानों का नाम महर्षि दयानन्द के नाम पर रखने की मांग

आर्यसमाज सुन्दर विहार का वार्षिकोत्सव 18 से 20 अप्रैल 2025 तक हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन व प्रवचनों के कार्यक्रमों में वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार और आचार्य श्याम जी के प्रवचन हुए, उन्होंने वैदिक मान्यताओं के अनुसार आर्यजनों का मार्गदर्शन किया। भजनोपदेशक श्री जितेन्द्र जी एवं श्रीमती उमा वर्मा जी ने तीनों दिन बहुत ही सुन्दर वैदिक भजन प्रस्तुत किए ।

आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के महामंत्री आर्य सतीश चड्ढ़ा जी, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान वीरेंद्र सरदाना जी, महामंत्री श्री राकेश आर्य जी, उप प्रधान श्री डालेश त्यागी जी विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे और अपनी शुभ कामनाओं के साथ समारोह में उपस्थित आर्यजनों मार्ग दर्शन किया। श्री मनोज शौकीन माननीय विधायक नांगलोई और श्रीमती मोनिका गोयल माननीया निगम पार्षद भी विशिष्ट अतिथि एवं मुख्य यजमान के रूप में पधारे और अपनी शुभ कामनाएँ भेंट की।

इन दोनों नेताओं को सम्मानित किया गया और निवेदन पत्र दिया गया कि सुंदर विहार क्षेत्र में सड़कों और उद्यानों के नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम पर रखे जाएं ।

आस पास की सभी आर्यसमाजों ने भी बड़ी श्रद्धा और उत्साह से भाग लिया और उपस्थिति लगभग 250 रही। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से यह उत्सव बड़ी कुशलता के साथ संपन्न हुआ। – ***अमर नाथ बत्रा, मंत्री***

आर्यसमाज सुन्दर विहार दिल्ली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंच संचालन एवं अतिथियों का स्वागत तथा सांस्कृतिक प्रस्तुति देते आर्यसमाज के बच्चे

200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें स्थापना वर्ष के अवसर पर
आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल एवं आर्य संस्थाओं के तत्त्वावधान में

राज्यस्तरीय आर्य महासम्मेलन – सोलन

10-11 मई, 2025 (शनिवार-रविवार)

कला एवं संस्कृति केन्द्र कोठों (जटोली) राजगढ़ रोड, सोलन

इस अवसर पर यज्ञ, भजन, युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, एवं आर्य महासम्मेलन के आयोजन होंगे।

दो दिवसीय महासम्मेलन में आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

सम्मेलन में पधारने वाले आर्यजन आवास व्यवस्था हेतु
श्री सुधीर आर्य जी 8219100344, 9857151334 से सम्पर्क करें।

-: निवेदक :-

प्रबोधचन्द्र सूद	विपन महाजन आर्य	सुधीर आर्य
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2025

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना।
- आयु सीमा: आवेदन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- परीक्षा ऑनलाइन बहुकल्पिक प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान, गणित और साधारण विज्ञान पर आधारित होगा।

आवेदन की अन्तिम तिथि : 30-06-2025

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी

आर्यसमाज डोरी वालान किशनगंज

आर्यसमाज महावीर नगर

आर्यसमाज न्यू मुल्तान नगर

आर्यसमाज संत नगर, पूर्वी कैलाश

आर्यसमाज नांगलोई

करौला गांव में 28 कुण्डीय यज्ञ

जन्तर-मन्तर, नई दिल्ली

सभी आर्य समाजो में साप्ताहिक सत्संग के उपरांत दिवंगत आत्माओं के प्रति मौन रखकर श्रृद्धाजंलियां दी गई, व्यथित परिवारों के प्रति शोक संवेदनाएं व्यक्त की गई और आतंकियों तथा आतंक परस्त पाकिस्तान के ऊपर कठोर कार्रवाई की

साप्ताहिक स्वाध्याय

जीवन का अन्तिम दृश्य

गतांक से आगे-

मैं भी उस समय दो क्षत्रिय राजपूतों की पीठ ठोंक देता तो वे उन लोगों को अच्छी तरह समझ लेते।

इस प्रकार जोधपुर में महर्षि जी के शत्रुओं की संख्या बढ़ रही थी। इसी प्रकार एक और घटना हो गई, जिसने विरोधियों के बल को बहुत बढ़ा दिया। महाराज यशवन्तसिंह का नन्हीजान नाम की एक वेश्या से गहरा सम्बन्ध था। एक रोज अपने निश्चित नियम के अनुसार महर्षि जी दरबार में पहुंचे। उस समय महाराजा के पास नन्हीजान आई हुई थी। महर्षि जी के आने का समय जानकर महाराजा उसे डोली में रवाना कर रहे थे। डोली उठने से पूर्व ही महर्षि जी को समीप आता देख कर महाराजा घबरा गए और डोली को स्वयं कन्धा लगाकर उठवा दिया। महर्षि ने यह देख लिया। इससे उनका चित्त बहुत ही अधिक क्षुब्ध हुआ। उस दिन अपने उपदेश में महर्षि ने राजधर्म का वर्णन करते हुए बताया कि राजा सिंह के समान हैं और वेश्याएं कुतियों के समान राजाओं का सम्बन्ध सिंहनियों से ही उचित है, कुतियों से नहीं। महाराज का सिर लज्जा से झुक गया और उन्होंने अपने सुधार का निश्चय किया। नन्हीजान को जब यह समाचार मिला तो वह जल उठी। उसका क्रोध सीमा को पार कर गया।

29 सितम्बर को रात के समय सोने से पूर्व महर्षि जी ने रोज के नियम से गर्म दूध मंगवाकर पिया। स्वामी जी का रसोइया जगन्नाथ नाम का एक ब्राह्मण था। दूध पीकर महर्षि जी सो गए। थोड़ी देर पीछे पेट में दर्द उठा और जी मतलाने लगा। रात को कई बार वमन हुआ। महर्षि जी ने किसी को सूचना न दी, परन्तु निर्बलता के कारण प्रातः काल देर में उठे और घूमने न जा सके। घर की शुद्धि के लिए आपने हवन की आज्ञा दी। हवन किया गया। महर्षि जी की दशा और अधिक खराब होने लगी उदर शूल, पेचिश और वमन का जोर बढ़ने लगा। डॉक्टर सूर्यमल जी महर्षि जी के भक्त थे। पहले उनका इलाज प्रारम्भ हुआ; परन्तु शीघ्र ही दरबार की ओर से डॉ अलीमर्दान खां को भेजा गया। इलाज बहुत हुआ, परन्तु दशा सुधारने की जगह बिगड़ती ही गई। प्रतिदिन दस्तों की संख्या बढ़ने लगी। मुंह, सिर और माथा छालों से भर गए, हिचकी बंध गई और शरीर बहुत ही कृश होने लगा। डॉ अलीमर्दान खां का इलाज उल्टा पड़ रहा था। इस घातक परिवर्तन की तह में डॉक्टर की मूर्खता थी या कोई और गहरा भाव था यह निश्चयपूर्वक कहने का इतिहास-लेखक को तब तक कोई अधिकार नहीं, जब तक कि किसी एक कल्पना की पुष्टि में कोई पुष्ट युक्ति न दी जा सके। हां, यह बात अवश्य सन्देहजनक है कि दशा तो बिगड़ रही थी और डॉक्टर साहब यही बताते थे कि दशा अच्छी हो रही है। महर्षि के शरीर में जहर घर कर गया था। डॉक्टरों ने यही सम्मति दी थी कि रोगी को विष दिया गया है। प्रतीत होता है कि कपटियों की प्रेरणा से जगन्नाथ ब्राह्मण ने रात को सोते समय दूध में जहर मिलाकर पिला दिया। कहा जाता है कि पता लगने

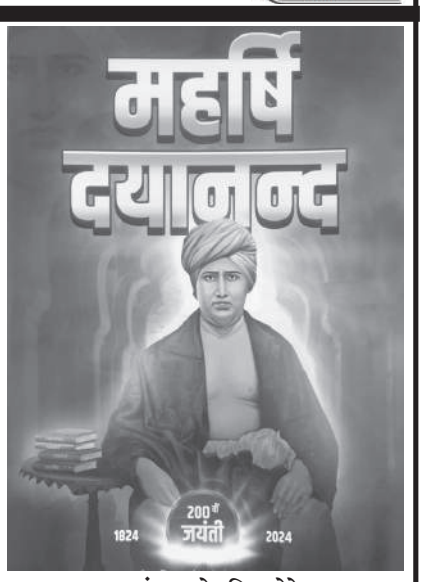

पर इस आशंका से कि मेरे भक्त उस रसोइये को सताएं नहीं, दयालु महर्षि ने किराया देकर उसे नेपाल की ओर भाग जाने को कहा था। **-क्रमशः**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Last scene of Life

Thus the number of enemies of Swami ji was increasing in Jodhpur. Similarly, another incident happened, which greatly increased the strength of the opponents. Maharaj Yashwant Singh had a deep relationship with a prostitute named Nanhijan. One day according to his routine, Swamiji reached the court. At that time, Nanhijan had come to the Maharaja. Knowing the time of Swami ji's arrival, the Maharaja was sending her off in a doli. Even before the doli was lifted, the Maharaja got scared seeing Swamiji coming near and got the doli lifted by himself. This made his mind very upset. That day, in his sermon, the sage described Rajdharma and said that kings are like lions and prostitutes are like bitches. Maharaj's head bowed down in shame and he decided to reform himself. When Nanhijan got this news, she got jealous. Her anger crossed the limit.

On September 29, before going to bed at night, Swami ji ordered hot milk and drank it as a daily rule. Swamiji's cook was a Brahmin named Jagannath. Swami ji fell asleep after drinking milk. After a while, stomache arose and he started feeling nauseous. He Vomited several times at night. Swami ji did not inform anyone, but due to weakness he got up late in the morning and could not go for a walk. He ordered Havan for the purification of the house. Havan was performed. Swami ji's condition started getting worse and the force of colic, dysentery and vomiting started increasing. Dr. Suryamal ji was in awe of Swamiji. First his treatment started _ but soon Dr. Alimardan was sent on behalf of the court. A lot of treatment was done, but instead of improving, the condition kept on deteriorating.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 5 का शेष

आतंकी और आतंक के पोषक पाकि....

मांग पुरजोर तरीके से भारत सरकार से की गई। 25 अप्रैल 2025 को जंतर-मंतर पर विश्व हिंदू परिषद के साथ मिलकर आर्य समाज द्वारा रोष व्यक्त किया गया और इस रोष में महारोष तथा आक्रोश प्रदर्शित करते हुए आर्य समाज द्वारा प्रातः काल यज्ञ किया गया और उन दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य, राजार्य सभा, आर्य वीर, वीरांगना दल के अधिकारियों ने पहले यज्ञ में आहुति दी और इसके उपरांत भारत माता की जय, वंदे मातरम, आतंकियों को फांसी दो, पाकिस्तान को सबक सिखाओ, पीओके को भारत में मिलाओ, आदि गगन भेदी नारों से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा।

विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी, जैन समाज, बौद्ध समाज, अनेक संत, शंकराचार्य, महामंडलेश्वर और हिंदू संगठनों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने भाव विचार व्यक्त करते हुए आतंकवादियों के आका देश पाकिस्तान को नक्शे से नष्ट करने के लिए भारत सरकार से मांग की। साथ ही हिंदुओं के ऊपर इस तरह के बर्बरता पूर्ण प्रहार से व्यथित लोगों ने आतंकवादियों का धर्म होता है और ये एक विशेष वर्ग हिंदुओं को टारगेट बनाकर के समय-समय पर मौत के घाट उतारते हैं, यह सिलसिला बिल्कुल बंद होना चाहिए, सब ने अपने-अपने विचार इस विषय पर बहुत ही गंभीरता, जिम्मेदारी और रोषपूर्ण तरीके से व्यक्त किये, इस अवसर पर आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी ने आर्य समाज की ओर से मृतकों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि आर्य समाज एक आंदोलनकारी संगठन है, भारत देश की आन बान और शान के लिए आर्य समाज सदा से बलिदान देता आया है लेकिन पहलगाम में बुजदिल आतंकियों के इस अमानवीय प्रहार से संपूर्ण आर्यजगत व्यथित हुआ है, इस तरह से हिंदुओं की पहचान करके आतंकियों ने स्पष्ट कर दिया है कि उनका मजहब ही मानवता को नष्ट करने का एक केंद्र बना हुआ है इसके लिए पूरे देशवासियों को एकजुट होकर इस क्रूरता का, निर्दयता का सामना करना चाहिए और हम सब इसके लिए तैयार हैं, आपने मृतकों को श्रद्धांजलि दी और परिजनों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त की तथा आर्य समाज की ओर से भारत सरकार से यह मांग की कि आतंकवादी और आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले देश पाकिस्तान को सबक सिखाने का समय आ गया है क्योंकि यह लोग उसी भाषा को समझेंगे जिसमें इनको 1965 में और कारगिल में समझाया गया था राजार्य सभा के अध्यक्ष श्री रवि देव गुप्ता जी ने भी अपने संक्षिप्त उद्बोधन में आतंकियों की क्रूरता को चिन्हित करते हुए पाकिस्तान के ऊपर कठोर कार्यवाही करने की मांग की और मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित की इस अवसर पर सभी हिंदू संगठनों ने शांतिपूर्ण तरीके से रोश प्रदर्शन किया और अपनी की श्रद्धांजलि दी।

आर्य समाज डोरीवालान, पूर्वी कैलाश, मुल्तान नगर, नांगलोई, बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, महावीर नगर और करावला गांव में भी रोष प्रदर्शन किया गया, इस अवसर पर क्षेत्रीय आर्यों ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए आतंकवादियों के ऊपर कठोर कार्यवाही की मांग की, सभी लोग हाथों में बैनर और तख्ती लेकर प्रदर्शन व्यक्त करते हुए, नारे लगाते हुए, लोगों को जागृत करते हुए आगे बढ़ रहे थे, इस रोष प्रदर्शन में आर्यों का एक ही संकल्प और उद्देश्य स्पष्ट हुआ कि देश और देशवासियों पर जब-जब कोई मुसीबत आएगी तब-तब आर्य समाज अपना पक्ष भी रखेगा और देश की अखंडता के लिए अपने संकल्प को भी दोहराएगा।

पृष्ठ 3 का शेष

आर्य समाज के स्थापना .....

आये कि आर्य समाज की स्थापना तिथि चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा ही है पंचमी नहीं।

इन विवरणों सहित आचार्य श्री वैद्यनाथजी द्वारा संकलित सामग्री को शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में छापकर प्रकाशित कर दिया है जो अति उत्तम कार्य हुआ है। यह पुस्तिका समाज की स्थापना तिथि जैसी ऐतिहासिक शंका का समाधान करने मे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है। इसे इस स्मृतिग्रन्थ में प्रकाशित भी किया जा रहा है।

चैत्री महोत्सव - इस विषय में आर्य समाज के व्यवस्थापक मंडल के एक प्रमुख व्यक्ति श्रीमान् पं. सेवकलाल कृष्णदास द्वारा लिखित एक उद्धरण कितना स्पष्ट है वह भी देखने योग्य है। उसका आर्यमाषा में रूपान्तर निम्न प्रकार है :-

"संवत् 1931 की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन आर्यसमाज सुदृढ़ हुआ। तभी से चैत्र सुदी 1 से दो-तीन दिवस तक अन्तरङ सभा के निश्चयानुसार प्रतिवर्ष वार्षिक महोत्सव व्याख्यान तथा मित्र मंडल का मिलन करने में आता था। परन्तु संवत् 1938 की साल में स्वर्गवासी श्रीमत् पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी महाराज (मरणसे पूर्व) जब बम्बई में पधारे थे उस समय समाज के लिए स्थान खरीदने आया था। तथा उसी स्थान में जब वार्षिक उत्सव करने में आया था तब उस में वृद्धि करके होमादि क्रिया उक्त महात्माने स्वयं कराई थी और उसीके अनुसार प्रत्येक वर्ष करने के लिए उन्होंने आज्ञा भी की थी। उसी के अनुसार उस वाद से प्रति वर्ष सुज्ञ वैदिक ब्राह्मणों को निमंत्रण देकर यहां पर होमादि क्रिया उनके द्वारा कराकर सत्कार पूर्वक प्रति वर्ष दक्षिणा देने में आती है और उसकी उचित व्यवस्था रखने के लिए प्रतिवर्ष अन्तरङग सभा से अधिकारी नियत करने में आते हैं। इसी से इस विषय में कोई खास प्रस्ताव कर रखने में आया नहीं।"

यह लेख आर्य समाज (काकड़वाड़ी) मुम्बई के शताब्दी दर्शन स्मृति ग्रन्थ (1875-1975) में प्रकाशित हुआ था। जो आज आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के अवसर पर साभार रूप में पाठकों के संज्ञान और स्वाध्याय हेतु प्रस्तुत किया गया है।

पृष्ठ 2 का शेष

पहलगाम में आतंकियों ने की 28 ....

बढ़ाएगी, खासकर तब जबकि आज की तरह वह गर्त में हो।

इसीलिए ओवैसी आतंकवादियों के लिए 'कुत्ते, कमीने, हरामजादे' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं। ओवैसी को मालूम है कि पाकिस्तानियों ने हिंदुओं को चुनकर, निशाना बनाकर भारी तकलीफ पहुंचाई है। वे हिंदुओं को यह संदेश देना चाहते हैं कि भारत के मुसलमान उनके साथ खड़े हैं, वे उनके साथी हैं और वे दुश्मनों की हौसला अफजाई नहीं करना चाहते।

पाकिस्तान और उसकी आईएसआई ने भारत के बहुसंख्यकों पर भारी दबाव डालकर उनके सब्र का फिर से इम्तिहान लेने की कोशिश की है। लगभग साढ़े चार दशकों से जो खेल कामयाब नहीं हो पाया, उसका यह महज एक और सबसे क्रूर रूप है। अब इसे फिर से नाकाम करना हिंदुओं के हाथ में है। आखिर, अपना कहने को हमारे पास एक ही देश है और हमारा वजूद हजारों साल से भी पुराना है, जो किसी विभाजनकारी विचारधारा के आधार पर रातों रात नहीं बन गया।

सबसे अहम मुद्दा यह है कि हम उन जगहों पर हमला करें जिनके कारण पाकिस्तान अपना रास्ता बदलने को मजबूर हो जाए। उसके व्यवहार में वांछित बदलाव लाने के लिए उसकी किन दुखती रगों पर चोट की जाए? गद्दी के पीछे किसकी ताकत है? इस तरह के फैसले पाकिस्तानी सत्तातंत्र की अंदरूनी छोटी-सी मंडली करती है, इसलिए हमें उसे ही निशाना बनाने पर जोर देना होगा।

हम यह नहीं कहते कि पाकिस्तान को जवाब न दिया जाए और इस समय उसकी दुर्गति पर खुश होकर बैठ जाएं। हमें भी पहलगाम में प्राण गवाने वाले प्रत्येक हिन्दू के लिए उतना ही दु:ख है जितना उनके परिवारों को इस लिहाज से जवाब तो देना होगा। जैसा कि अभी पूर्व सेना अध्यक्ष मनोज नरवने जी ने सुझाव दिया है की, पेंटागन के पूर्व अधिकारी माइकल रुबिन ने आतंकवाद को बढ़ावा देने की उनकी भूमिकाओं के कारण पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष आसिम मुनीर की तुलना ओसामा बिन लादेन से की है। ऐसे ही एक अच्छी शुरुआत करने के लिए हमें अपनी अंतर्राष्ट्रीय साख का इस्तेमाल कर सकते हैं। आतंकवाद को शह देने वालों के करीबी लोगों को उन देशों से जबरन निकाला जा सकता है जहां वे काम या पढ़ाई वगैरह कर रहे हों। हमें वहीं चोट करनी है जहां उसे सबसे ज्यादा दर्द पहुंचे।

दूसरा जाने-पहचाने अधिकारियों के खिलाफ गिरफ्तारी का अंतर्राष्ट्रीय वारंट जारी करने का अच्छा परिणाम मिलेगा (जैसा कि फिलीपींस के पूर्व राष्ट्रपति रोड्रिगो दुतेर्ते के मामले में निकला, जिन्हें इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट द्वारा जारी किए गए वारंट पर मार्च 2025 में गिरफ्तार किया गया। पाकिस्तान के नेतृत्व के होश तभी ठिकाने लगेंगे जब उसे ऐसे घेर लिया जाए कि वह कहीं भाग न पाए और पूरी दुनिया में अलग-थलग पड़ जाए। इसी के साथ हम सबको एक राष्ट्रीय एकता के रूप में अपना संतुलन नहीं खोना है, ताकि अनजाने में हम आतंकवाद के इस खेल के मोहरे न बन जाएं। हमें सरकार को भी समय देना होगा ताकि वह उपयुक्त जवाब सोच सके और दे सके। लेकिन तब तक हमें अपनी सरकार और राष्ट्र के प्रति एक साथ खड़े रहना होगा।

-संपादक

पृष्ठ 4 का शेष

अपने विशेष उद्बोधन से कार्यक्रम का आरंभ करते हुए कृण्वन्तो विश्वमार्यम के उद्घोष को साकार करने की बात कही। सभा प्रधान श्री रामकुमार पटेल जी ने स्वागत भाषण में उपस्थित अतिथि गणों का स्वागत किया।

श्री रूपनारायण सिह जी ने छत्तीसगढ़ की पवित्र भूमि को नमन करते हुए आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रशंसा की। श्री गौतम खट्टर जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा किए गए मानव कल्याण के कार्यों को वर्णित करते हुए वर्तमान परिस्थितियों में धर्म की रक्षा को एक बहुत बड़ी चुनौती बताया और कहा कि वर्तमान में सनातन धर्म का रक्षक आर्य समाज है, वरना तो जितने भी मत है वह सब हिंदुओं के विरोध में खड़े हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के काल में जो स्थिति सनातन धर्म की थी और जो कार्य महर्षि ने उस समय किये, आज वे सब कार्य अत्यंत प्रासंगिक है। विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में छत्तीसगढ़ के महान आर्य दानी श्री राव तुलाराम परगनिया जी को स्मरण करते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से उन्होंने अपनी पुत्री को पढ़ने के लिए इच्छा जाहिर की तो सबने कड़ा विरोध किया लेकिन आर्य समाज के गुरुकुल में जब उनकी बेटी को पढ़ाई करने का अवसर मिला तो श्री राव तुलाराम जी ने उस समय ढाई हजार एकड़ भूमि आर्य समाज को दान देकर शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्य समाज किसी भवन का नाम नहीं है बल्कि यह तो एक आंदोलनकारी संगठन है। जो शिक्षा, सेवा, संस्कृति और संस्कारों का संरक्षक है। आपने श्री घनश्याम सिंह गुप्त का उदाहरण देते हुए जातिवाद को खत्म करने का जो उन्होंने महान कार्य किया, 1937 में आर्य मैरिज वैलिडेशन एक्ट बनवाकर अंतर्जातीय विवाहों को मान्यता दिलवाई, उनको भी स्मरण किया। श्री दिलीप सिंह जूदेव के कार्यों को स्मरण करते हुए आपने शुद्धि आंदोलन को आधार बनाकर स्वामी श्रद्धानंद जी को भी याद किया और आर्यजनों से अनुरोध किया कि हम अपने जीवन काल में आर्य समाज से प्रेरणा लेकर निरंतर आगे बढ़े और आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने का भरसक प्रयास करें। आपने आगामी अक्टूबर में दिल्ली में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में सबको आमंत्रित किया और इसके लिए अभी से तैयारी करने की बात कही।

इस अवसर पर डॉ. रमन सिंह जी ने उपस्थित आर्यजनों, आयोजकों, आचार्यों, विद्वानों को संबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज 150वां स्थापना वर्ष मना रहा है, लेकिन 5000 वर्षों के इतिहास में महर्षि दयानंद सरस्वती जैसा संत इस धरती पर दिखाई नहीं देता, इन 150 वर्षों की यात्रा में महर्षि दयानंद की प्रेरणा से आर्य समाज ने भारतीय संस्कृति का उद्धार किया है, महर्षि के काल में जो उस समय कुरीतियां, पाखंड, अंधविश्वास फैला हुआ था, जिसके विरुद्ध बोलने की भी को सोच नहीं सकता था, उस समय महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने आवाज उठाई और देश के स्वाभिमान को जगाया। आजादी के आंदोलन में चाहे राम प्रसाद बिस्मिल हो, लाला लाजपत राय हो, चंद्रशेखर आजाद हो या अन्य अनेक स्वतंत्रता सेनानी, सबको देश की आजादी के लिए उन्होंने प्रेरित किया। महर्षि ने न केवल वेदों की ओर लौटो, का उद्घोष किया बल्कि समाज सुधार के लिए जो उन्होंने कार्य किया वह अत्यंत अनुकरणीय है। धर्मांतरण की समस्या से आर्य समाज ने देश को बचाया, उन्होंने एनी बेसेंट के उस वाक्य को उद्धृत करते हुए कहा जो महर्षि दयानंद सरस्वती को लेकर उन्होंने कहा था, डॉ रमन सिंह ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों का अगर कोई मंदिर बनाया जाए तो सबसे ऊंची प्रतिमा महर्षि दयानंद सरस्वती की होगी। महर्षि ने स्वदेशी, स्वराज और स्वाभिमान को जागृत करके देश को आगे बढ़ने का अवसर दिया। हमें अपनी संस्कृति पर गर्व है, आज की सरकार महापुरुषों के आशीर्वाद से सनातन धर्म की रक्षा के लिए आगे बढ़ रही है, सभी अयोजकों को इस कार्यक्रम के लिए बधाई ।

छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती की भारत तथा विश्व को देन कि प्रशंसा करते हुए कहा की आर्य समाज के विचार संसार को सत्य ,अहिंसा और सेवा का मार्ग दिखा रहे हैं, आर्य समाज को मानव कल्याण के कार्य करते हुए 150 वर्ष पूरे हो गए हैं, आर्य समाज द्वारा निरन्तर देश सेवा, धर्म संस्कृति की रक्षा, और जन जागरण का कार्य निरन्तर किया जा रहा है। आपने बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित होकर 1999 में वे आर्य समाज से जुड़े और विभिन्न अवसरों पर समाज के मनीषियों का मार्गदर्शन उन्हें प्राप्त होता रहा है। आर्य समाज निरंतर धर्म, शिक्षा और संस्कारों का पुनीत कार्य कर रहा है, यह अपने आप में अत्यंत गौरव की बात है। स्वामी दयानंद एक महान विचारक चिंतक थे, उनका सत्यार्थ प्रकाश आज भी लाखों करोड़ों लोगों को सत्य का मार्ग दिखा रहा है, इससे पहले आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री जी का स्वागत किया और मुख्यमंत्री जी द्वारा आर्य समाज के विभिन्न कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नमन करते हुए कहा कि उनके जीवन मूल्यों और विचारों को आत्मसात करने से शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का संकल्प पूरा होगा। आपने आर्य समाज के छठे नियम की व्याख्या करते हुए कहा कि आर्य समाज ही वह संगठन है जो सार्वभौमिक कल्याण की कामना करता है। यह दो दिवसीय सनातन वैदिक धर्म संस्कृति महासम्मेलन अत्यंत प्रेम सौहार्द के वातावरण में संपन्न हुआ और अनेक मानव कल्याण के संकल्प इस अवसर पर लिए गए। अन्त में श्री रामकुमार पटेल जी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 28 अप्रैल, 2025 से रविवार 04 मई, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 1-2-3/05/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 अप्रैल, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष
के ऐतिहासिक अवसर पर

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष विशेषांक का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं सम्मापित पाठकों को जानकर हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर साप्ताहिक आर्य सन्देश के विशेषांक **"150वां आर्य समाज स्थापना वर्ष"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें महर्षिकृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ, महषि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, सेवा कार्य, उनके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास, आर्य समाज द्वारा किए गए विभिन्न सफल आंदोलन, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आदि विषयों पर शोधपरक लेख, कविताएं, रचनाएं, प्रेरक प्रसंग एवं संस्मरण आदि प्रकाशित किए जाएंगे।

अत: समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों, भजनोपदेशकों एवं कवि महानुभावों से निवेदन है कि उपरोक्त विषयों पर अपने मौलिक एवं अप्रकाशित लेख एवं रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, विद्यालयों, गुरुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और उद्योगपति परिवारों से सहयोग रूप में विज्ञापन भी सादर आमन्त्रित किए जाते हैं।

विशेषांक का आकार 23x36x8 (A4 Size) होगा एवं विज्ञापन दर निम्न प्रकार हैं -

विज्ञापन का आकार	विज्ञापन दर (रंगीन)	विज्ञापन दर (श्याम-श्वेत)
पूरा पृष्ठ	10000/- रुपये	7500/- रुपये
आधा पृष्ठ	5000/- रुपये	4000/- रुपये

इसके साथ ही **कवर पृष्ठ विज्ञापन - अन्तिम पृष्ठ हेतु** 51000/- रुपये एवं **कवर पृष्ठ 2 एवं 3 हेतु** 31000/- **रुपये** की की सहयोग राशि निर्धारित की गई है।

कृपया अपना विज्ञापन सहयोग एवं प्रकाशनार्थ सामग्री **'आर्य सन्देश साप्ताहिक'** के नाम **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें या **aryasandeshdelhi@gmail.com** पर ईमेल करें। - ***सम्पादक***

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द 200वीं जयन्ती
स्मृति डाक टिकट
आर्यजन एवं आर्य संस्थाएं अधिकाधिक खरीदें, स्मृति रूप में रखें एवं प्रयोग करें

प्रथम दिवस आवरण, ब्रॉशर तथा भेंट हेतु एलबम भी उपलब्ध

यह डाक टिकट ऑनलाइन खरीदें और घर बैठे प्राप्त करें सम्पूर्ण भारत में होम डिलीवरी की सुविधा

vedicprakashan.com
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ऑनलाइन स्टोर
96501 83336

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह